प्रकाशनार्थ समाचार

तीन दिवसीय राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समापन

तुष्टिकरण की नीति राष्ट्र के अस्तित्व के लिए घातक –आर्य नेता डा.अनिल आर्य

जातिवादी आरक्षण ने समाज कौ समरसता को छिन्न भिन्न कर दिया है–स्वामी आर्य वेश

नई दिल्ली ।रविवार, 27 जनवरी 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के 34 वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित ''अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन'' का रामलीला मैदान, अशोक विहार, दिल्ली में भव्य समापन हो गया । सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 5000 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए । सम्मेलन का शुभारम्भ 251 कुण्डीय विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ हुआ जिसमें कड़कती सर्दी के बावजूद हजारों श्रद्धालुओं ने प्रातः काल पहुंच कर अपनी पवित्र आहुति समर्पित की । यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज ने कहा कि वेदों के रास्ते पर चल कर ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है । आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ उतर प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने ध्वजारोहण कर सम्मेलन का उद्घाटन किया । श्री दर्शन अग्निहोत्री, राजेश गुप्ता, जीवनलाल आर्य, ओमप्रकाश नागिया, सुदेश अरोड़ा, डा. रमाकान्त गुप्ता मुख्य यजमान रहे ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि वोट बैंक की सरकारी तुष्टिकरण की नीति ''राष्ट्र के अस्तित्व के लिए ही घातक है'', उन्होंने जोर देकर कहा कि आज सभी राजनीतिक दल वोटों के चक्कर में अपने सिद्वान्त, राष्ट्रीय कर्तव्यों, दायित्वों को भूलते जा रहे हैं जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है । जब राष्ट्र ही नहीं रहेगा तो बताओ राज किस पर करोगे । डा. आर्य ने कहा कि हिन्दु के मजबूत होने से ही राष्ट्र मजबूत होता है और हिन्दु के कमजोर होने से राष्ट्र कमजोर होगा आप कश्मीर, आसाम, भिजोरम आदि के हालात देख सकते हैं जहां जहां हिन्दु कमजोर या अल्पसंख्यक हुआ वह हिस्सा देश से टूटा है तथा वहां अलगाववाद, देशद्रोह के स्वर

उठे हैं । आर्य समाज के कार्यकर्ता देश भर मे राष्ट्रीय एकता, अखण्डता को मजबूत करने के लिए जाकर कार्य करेंगे ।

वैदिक विरक्त मण्डल व सार्वदेशिक सभा के मन्त्री स्वामी आर्य वेश जी ने कहा कि जातिवाद आज समाज के लिए नासूर बन चुका है, जब तक वेदों के अनुसार गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित व्यवस्था नहीं होगी तब तक समाज में एकता की बात बेमानी है, आप दौड़ प्रतियोगिता में बराबर पंहुचने के लिए एक व्यक्ति को 100 मीटर पर, दूसरे को 200 मीटर पर व तीसरे को 300 मीटर पर खड़ा कर दौड़ प्रतियोगता करवायेंगे तो बताओ समाज में दूरियां, विघटन बढ़ेगा के नहीं आप स्वयं विचार कर सकते हैं जातिवादी आरक्षण ने सामाजिक समरसता को छिन्न भिन्न कर दिया है, विघटन की इस प्रक्रिया को रोकने के लिए बलिदानों की आवश्यकता पड़ेगी । देश के सभी युवाओं को आगे बढ़ने के समान अवसर बिना किसी जाति, लिंग के आधार पर मिलने चाहिये ।

उतरी दिल्ली की महापौर श्रीमती मीरा अग्रवाल ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने नारी जाति पर अनकों उपकार किये वेदों को पढ़ने का समान अधिकार दिया, शिक्षा देने व समाज में समान स्थान देकर बराबरी का अवसर प्रदान किया । महिला समाज महर्षि दयानन्द का सदैव ऋणी रहेगा । आज नारी को उपभोग की वस्तु मान लिया गया है जिससे समाज में अपराध बढ़ रहे हैं ।

डा.महेन्द्र नागपाल (नेता सदन,उतरी दिल्ली नगर निगम) ने कहा कि भगवा रंग हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति की त्याग, तपस्या का प्रतीक है, केन्द्रीय गृहमन्त्री का ब्यान अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण है तथा आतंकवदियों के हौसले बढ़ाने वाला है । हरिद्वार से पधारे स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने कहा कि योग के माध्यम से हम अपने जीवन को सुखी व निरोग बना सकते हैं । पौढ़ी गढवाल से पधारे ब्र. विश्वपाल जयन्त ने कहा कि आज विदेशों में वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ रही है। आपने कहा कि हमें अपने प्रचारक तैयार करके विदेशों में भेजने चाहिये । सरदार एस.एस. गुलशन, (जालन्धर), नरेन्द्र आर्य 'सुमन', आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, पं. घनश्याम प्रेमी, पं. रमेशचन्द स्नेही के मधुर भजन हुए । युवा प्रवक्ता ब्र. रामचंद्र आर्य,(सोनीपत), आचार्य रमेशचंद्र शा़स्त्री, ओम सपरा,सी.

एल.मोहन,अमीरचन्द रखेजा,राजेन्द्र लाम्बा,सत्यपाल गांधी,जीवनलाल आर्य,रामहेत आर्य,कांतिप्रकाश आर्य,दुर्गेश आर्य,यशोवीर आर्य ने भी समारोह में भाग लिया।

पूर्व विधायक मांगेराम गर्ग, वैदिक विद्वान स्वामी चन्द्रवेश जी(उ.प्र.),गोपाल दुर्गा(अमेरिका), डा. वीरपाल विद्यालंकार, आचार्य कृष्णप्रसाद कौटिल्य (झारखण्ड), प्रो.सारस्वत मोहन मनीषी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, डा. धर्मपाल आर्य (पूर्व कुलपति,गुरूकुल कांगड़ी), गोबिन्दसिंह भण्डारी (बागेश्वर,उतराखण्ड), सुरेन्द्र कोहली, प्रभा सेठी, उर्मिला आर्या, पूर्व महापौर शकुन्तला आर्या, वैद्य इन्द्रदेव, प्रेम सब्बरवाल, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, सुभाष आर्य(जम्मू), मित्रमहेश आर्य(अहमदाबाद), आनन्द प्रकाश आर्य(हापुड़), स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती(पलवल), सत्यभूषण आर्य(फरीदाबाद),स्वतन्त्र कुमार(करनाल), अशोक आर्य,(पंचकुला), राजीव रंजन,(गुरूदासपुर, पंजाब), स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ़), स्वामी सौम्यानन्द जी(मथुरा), रमाकान्त सारस्वत व हरिशकंर अग्निहोत्री,(आगरा), रामकृष्ण शास्त्री(बहरोड़), ब्र.दीक्षेन्द्र(रोहतक), योगेन्द्र शास्त्री(जीन्द), प्रकाशवीर बत्रा, सुशील शर्मा(शामली), मनोहरलाल चावला(सोनीपत), विमला ग्रोवर, आचार्य महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह, डा. नरेन्द्र वेदालंकार, देवेन्द्र भगत, अरविन्द मिश्रा,डा.रचना विमल दूबे, कै. अशोक गुलाटी, स्वामी यज्ञानन्द, विजय आर्य(मोहाली) आदि ने अपने विचार रखे ।

पूरा अशोक विहार का क्षेत्र ओ३म् के केसरिया झण्डों से सजा हुआ था । देश के कोने-कोने से पधारे हजारों आर्य जन अत्यन्त उत्साह के साथ नये संकल्प व उर्जा के साथ घरों को लौटे ।

-डा. अनिल आर्य
संयोजक, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
फोनः 09810117464, 9868051444
Email: aryayouth@gmail.com